ISSN 0976-0830

Mānaviki

AN INTERDISCIPLINARY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

Volume 3 • Number 1 • 'Varsh Pratipada', March 2012

Editors

Pradeep Kumar Rao and Om Jee Upadhyay

The Journal of Rekha Smriti Shodh Sansthan
Gorakhpur (U.P.)

हिन्द स्वराज और आधुनिक भारत

रविन्द्र सिंह राठौड़ *

इतिहास में कुछ क्षण पल और युग ऐसे भी आये हैं जब वर्तमान पीढ़ी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो निर्णय लेने में असमर्थ हो जाती है। वह समय ऐसा होता है जबकि न तो पुराने सूत्र काम आते हैं न ही सर्वत्र किसी विषय-मुद्दे, यहां तक कि हर एक बात पर मत-वैभिन्नता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है, व्यक्ति के निजी, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में विरोधाभास और विघटन परिलक्षित होता है और चहूँ ओर निराशा और घटाटोप का साया व्याप्त रहता है, देश जिन प्रतिमानों के आधार पर या भरोसे आगे बढ़ता आ रहा था, वे विफल हो, नाकाम हो जाते हैं, उस स्थिति में किसी नई राह की ओर देश-समाज व्यक्ति टकटकी बांधे देखता है, इस आशय से कि इस चुनौती का सामना किया जा सके। उस समय यदि कोई महापुरुष, संत, नेता के रूप में सामने आकर उस समय की स्थितियों का विश्लेषण कर, युग और जन-मानस की चेतना को पहचान कर समस्या से छुटकारा पाने का रास्ता बताता है और जनता का नेतृत्व करता है, वह देवदूत-मसीहा से कम नहीं होता। भारत में 19वीं सदी में ऐसे ही एक महापुरुष ने जन्म लिया जिसको हम मोहनदास करमचन्द गांधी के रूप में जानते हैं। उन्होंने जो कार्यक्रम जनता के समाने प्रस्तुत किए उसमें हिन्दुस्तान का स्वराज्य का ध्येय प्रमुख साध्य था और लोग सुखी हो। हिन्द स्वराज नामक पुस्तक के बारे में गांधीजी ने स्वयं लिखा है कि मेरी यह छोटी-सी किताब इतनी निर्दोष है कि यह बच्चों के साथ में भी दी जा सकती है। यह द्वेष धर्म की जगह प्रेमधर्म सिखाती है, हिंसा की जगह आत्म-बलिदान स्थापित करती है और पशुबल के खिलाफ टक्कर लेने के आत्मबल को खड़ा करती है।[1] भारतीय सभ्यता के समकालीन विमर्श का आकार ग्रन्थ मानता है तो कोई उसे विश्व का श्रेष्ठतम प्रेरक देश बनाने का सूत्र कहता है तो कोई सोवियत क्रांति की भांति मात्र मशीन पर टिके पूंजीवादी बदलाव तक सीमित न होकर पूरे पूंजीवादी दर्शन के विकल्प के रूप में देखता है।

हिन्द स्वराज का अध्ययन कई तरह से किया जा सकता है और किया गया है। अनेकों ने तो उसे मशीनी सभ्यता के सम्पूर्ण अस्वीकार अथवा भौतिकवाद के अस्वीकार के रूप में ही देखा है, लेकिन यदि केवल बात इतनी ही नहीं होती अथवा तो हिन्द

---

* **सहायक आचार्य**, अहिंसा एवं शान्ति विभाग, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राजस्थान)

स्वराज को कोई महत्त्व नहीं होता। लेकिन सच्चाई तो यह है कि हिन्द स्वराज गांधीजी के जीवन दर्शन का मौलिक सूत्र है और अंतिम समय तक गांधीजी उसे ऐसा ही मानते रहे। हिन्द स्वराज का उद्देश्य एक स्वस्थ समाज और उसके प्रतिनिधि सेवक के रूप में स्वस्थ राज्य का आधार प्रस्तुत करना है। जब गांधी जी मशीनों की गुलामी का विरोध करते हैं, तो साफ तौर पर मशीनों की गुलामी का ही विरोध है। जो लोग उसे मशीनों का विरोध बताते हैं, वे दरअसल मशीनों के गुणदोष का परीक्षण करने का समाज को अधिकार देना नहीं चाहते। मुख्य बात यही है कि रेल हो या हवाई जहाज, या कम्प्यूटर या अन्य आधुनिकतम संचार माध्यम, उसमें लगने वाली पूंजी और ताकत तथा उनके कारण दूसरों की छीनी जाने वाली शक्ति और साधन स्रोतों का भी विचार साथ-साथ किया जाय।[2]

औद्योगिक सभ्यता पर यूनेस्को के उस अध्ययन पत्र को भी धयान में रखना चाहिए जिसमें बताया गया है कि मशीनी जीवन में 60 प्रतिशत मनहूसियत से पीड़ित रहे हैं एवं 90 प्रतिशत लोग बिना समझे-बुझे यंत्रवत काम करते जाते हैं। गांधीजी ने मशीन पर इसलिए इतना निर्मम प्रहार किया क्योंकि उन्होंने समझा कि भोगवादी सभ्यता की जननी है, यही उसका जीवनधार है। इसी मशीन सभ्यता ने सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, पर्यावरण प्रदूषण, हिंसा एवं युद्धवाद तथा जीवन में भोगवादी अनैतिकता लाई है। यो पश्चिम से न तो उनको कोई विद्वेष था न प्राचीन आध्यात्मिक भारतीय संस्कृत के प्रति पक्षपात करने में उनको कोई संकीर्ण राष्ट्रवाद ही था। इस अर्थ में 'हिन्द स्वराज' भारत के लिए ही नहीं 'वैश्विक स्वराज' का घोषणा-पत्र था। उनका विरोध मशीन से भी नहीं था, हां मशीन के प्रति पागलपन से उपजे भोगवाद से था। भोगवाद अनैतिकता का पोषण करता है तथा नैतिक-आध्यात्मिक जीवन के मार्ग में वह बाधा है।[3]

असली संघर्ष उनकी अपनी भाषा में कहे तो असली सत्याग्रह ब्रिटिश सम्राज्य के विरूद्ध नहीं बल्कि उस आधुनिकतावादी सभ्यता के विरूद्ध है जो हिन्दुस्तान को धर्मभ्रष्ट कर रही है। गांधीजी इस आधुनिक सभ्यता की आलोचना इसीलिए करते हैं कि इसकी उपलब्धियों ने मनुष्य के भौतिक और आध्यात्मिक विकास में कुछ नहीं जोड़ा, बल्कि उसमें नीति या धर्म की बात ही नहीं है और इसीलिए वह स्पष्ट कहते हैं कि यह सभ्यता तो अधर्म है।[4] महात्मा गांधी की राय में वर्तमान जीवन की अधिकांश बुराईयों की जड़ पश्चिमी या आधुनिक सभ्यता है। युद्ध और भयंकर नरसंहार, शोषण और बहुसंख्यक प्रजा की दरिद्रता और आधुनिक जीवन प्रणाली से उत्पन्न तनाव, असुरक्षा, स्वार्थ केन्द्रित तथा अनीतिकारक दृष्टि आदि सब बातें इस पश्चिमी सभ्यता की उपज है। गांधीजी ने लंदन में भारतीय विद्यार्थियों की एक सभा को संबोधित करते हुए 1931 ई में कहा था-"मुझे अपने देशवासियों की पीड़ाओं के निवारण से भी ज्यादा चिंता मानव-प्रकृति के बर्बरीकरण

को रोकने की है।[5]"

धर्म और ईश्वरीय शासन जैसे पद कुछ भ्रांतियां उत्पन्न कर सकते हैं। धर्म पद का प्रयोग आमतौर पर ऐतिहासिक, धार्मिक सम्प्रदायों तथा हिन्दू धर्म इस्लाम या ईसाइयत आदि के लिए भी है ईश्वरीय राज्य की कल्पना को भी बड़ी आसानी से थियोक्रेटिक के साथ एक कर देखा जा सकता है क्योंकि विभिन्न धर्मतंत्र अपने द्वारा निर्देशित-नियंत्रित राज्य व्यवस्था को ही ईश्वरीय राज्य कहते हैं। गांधीजी ईश्वरीय राज्य की बजाय कई स्थलों पर रामराज्य शब्द का प्रयोग भी करते हैं जिसका सीधा अर्थ न्यायपूर्ण सद्शासन से है, लेकिन कुछ लोग उसे भी सम्प्रदायबद्ध अर्थों में ले सकते हैं। इसलिए यह बेहतर होगा कि धर्म और ईश्वर से सम्बन्धित गांधीजी की अवधारणाओं पर स्पष्ट विचार कर लिया जाये। गांधीजी का धर्म से आशय सनातन धर्म से है और अपनी सारी बुनियादी मान्यताएं उन्होंने वही से प्राप्त की है।[6]

हिन्द स्वराज में गांधी जी ने तत्कालीन सभी समस्याओं और दुःखों का कारण उस औद्योगिक सभ्यता को बताया था जिसके पीछे यूरोप तेजी से भाग रहा था अपने पीछे भारत सहित पूरी दुनिया को ले जा रहा था। अच्छे आरामदायक घरों का निर्माण, भले के बदले एक के बाद एक पांच गोलियाँ छोड़ सके ऐसी चक्कर वाली बन्दूकों का इस्तेमाल, भाप के यंत्रों से हल चलाकर एक आदमी द्वारा बहुत सारी जमीन जोत पाना और बहुत सा पैसा जमा कर सकना, रेलगाड़ी और हवाई जहाज से सफर कर थोड़े ही घंटों में कहीं पहुंच जाना, हाथ-पैर हिलाने की जरूरत न होना, बटन दबाकर सारे काम करना, तोप के गोले से हजारों की जान लेने जैसी विकास की अंधी दौड़ को उन्होंने आज की सभ्यता की निशानियां माना है। गांधीजी विचार से यह सभ्यता दूसरों का नाश करने वाली है और खुद नाशवान है। पैगम्बर मोहम्मद साहब की तरह वह इसे शैतानी सभ्यता और हिन्दू-धर्म की तरह कलजुग मानते हैं।[7] गांधीजी ने अपने स्वराज की अवधारणा को एक वाक्य में समेटते हुए यह कह दिया है कि-हम अपने ऊपर राज करें वही स्वराज्य है, और वह स्वराज्य हमारी हथेली में है।

गांधीजी का मानना था कि समाज और मनुष्य की सेवा के लिए उद्योग है। उद्योग का विस्तार और उद्योगवाद में बहुत बड़ा फर्क है। उद्योगवाद का अर्थ है, किसी खास तरह के उद्योग तंत्र को ही मानव जाति का लक्ष्य मान लेना। व्यवहार में इसका अर्थ यह होगा कि एक ख़ास तरह की उद्यमशीलता यानी पुरुषार्थ के पक्ष में शेष तरह के पुरुषार्थों की यानी उद्यमशीलता की स्वतंत्र संभावनाओं को नष्ट कर देना और इस प्रकार मानव समाज के स्वत्व का अपहरण कर उसे मुटठी भर लोगों की अधीनता में ले आना। गांधीजी ऐसी उद्योगवादी सभ्यता को शैतानी सभ्यता और पापपूर्ण सभ्यता कहते हैं।

समाज से युद्धरत राज्य है इसलिए गांधीजी का मानना था कि समकालीन सभ्यता का अनिवार्य घटक माना जाता है और इस युद्ध को दूसरों के उद्धार के लिए दया के रूप में पेश किया जाता है, जिसमें राज्यकर्त्ताओं की इच्छा के अनुसार सारे समाज को धर्मान्तरित यानी रूपांतरित किया जाए। गांधीजी इसे बहुत बड़ा पाप मानते थे। गांधीजी ने सदा यह माना कि समाज राज्य से बड़ा है और राज्य समाज की सेवा के लिए है। प्रश्न है कि पश्चिमी सभ्यता का मूल दोष क्या है? गांधीजी के अनुसार पश्चिम की पूरी सोच मनुष्य शारीरिक सुख के इर्द-गिर्द ही सीमित है। यही इसका सबसे बड़ा दोष है। वास्तव में पूरा पश्चिमी चिन्तन मनुष्य को शरीररूपी पुतला मान लेता है और वह आत्मा का विचार करता ही नहीं। गांधीजी कहते हैं इस सभ्यता की पहचान तो यह है कि लोग बाहरी दुनिया की खोजों में और शरीर के सुख में धन्यता-सार्थकता और पुरुषार्थ मानते हैं। वे सभ्य किसको कहते हैं? जो लोगों की तरह कपड़े पहनने लगे, उनकी तरह खाना खाने लगे, पहले की तुलना में ज्यादा अच्छे घरों मे रहने लगे तो वे सभ्य हालत में आये हुए माने जाने लगे। यानी इस सभ्यता की कसौटी यूरोपीय या पश्चिमी की नजर में भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि हुई है। इसके परे सभ्यता का विचार ही नहीं।

पश्चिमी सभ्यता पर आधारित व्यवस्था के कारण भारत ही नहीं पूरा विश्व जिस भयावह स्थिति में पहुँच गया है। उसमें हिन्द स्वराज और उसके बीज रूपी सूत्रों को विस्तार देने वाली उनकी परवर्ती रचनाओं को सामने लाकर गांधीजी की चाहत को मूर्त रूप देने का अभियान आरंभ होना चाहिए। जो लोग यह कहते हैं, कि पश्चिमी लोकतंत्र एवं बाजार आधारित पूंजीवाद का कोई स्पष्ट विकल्प नहीं, हिन्द स्वराज के बाद उनकी पूरक रचनायें उन सबका मुंह बंद करा सकती है। गांधीजी की तरह जिनको भारतीय सभ्यता की महानता में विश्वास है। जो भारत को फिर से गौरवपूर्ण राष्ट्र के रूप में खड़ा कर विश्व को कल्याण का रास्ता दिखाना चाहते हैं, उनके सामने हिन्द स्वराज को अमली जामा पहनाने की दिशा काम करना एकमात्र उपलब्ध श्रेष्ठ व्यावहारिक विकल्प है। जो मनुष्य को मनुष्य रहने देना चाहते हैं, जो उनको भोग का दास, मशीन का दास बने नहीं रहने देना चाहते, उनको आगे ही आना होगा।[8]

हमारी सबसे बड़ी अपेक्षा है कि हम अपनी आधुनिकता को परिभाषित करें, क्योंकि सन् 1909 मे जब हिन्द स्वराज लिखा गया तो उसके पीछे यही उद्देश्य था कि हम अपनी आधुनिकता को परिभाषित करें। हमारी आधुनिकता क्या है? कोई भी उत्तर नहीं दे सकता कि हमारी अपनी आधुनिकता के तत्व क्या हैं? जो कुछ भी आप आधुनिक कहेंगे। वह विदेश से आयोजित आधुनिकता के तत्व होंगे। हिन्द स्वराज में गांधीजी ने लिखा था, हमें अंग्रेजी राज्य तो चाहिए पर अंग्रेज नहीं चाहिए। भारत की अपनी

आधुनिकता को रेखांकित करने की जो कोशिश उस वक्त विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर या दूसरे किसी ने भी की, हिन्द स्वराज लिखकर गांधीजी ने उसी को रेखांकित करने की कोशिश की। हमारे देश में प्राचीन का कभी खण्डन नहीं होता है जो चीज है, उसको कभी तोड़ते नहीं, उसके साथ जोड़कर एक विकल्प पैदा करते हैं। हमारे लिए आधुनिकता का अर्थ इस प्रकार विकल्प पैदा करना है। दो-पांच विकल्प जब हमारे यहां पैदा हो जाते हैं, तब एक आधुनिक जीवन तैयार होता है।

हिन्द स्वराज सर्वोदय का घोषणा-पत्र है। हिंसा को नेस्तनाबाद करके एक नए अहिंसक समाज के निर्माण का दर्शन उसमें प्रस्तुत हुआ। पूरी एक शताब्दी की समयावधि में यह दर्शन अधिक स्पष्ट, अधिक विस्तृत, अधिक सर्वांगी होता आया है। आज विभिन्न क्षेत्रों में सर्वोदय विचारधारा का अपना विशिष्ट पहुंच है। जो पाश्चात्य देशों में हुआ वही हमारे लिए भी विकास का मॉडल है, ऐसा एक मानस रूह हो गया है। हम पिछड़ गए हैं, इस दौड़ में हमें उसके साथ ही जाना है, नहीं तो अविकसित ही रह जाएंगे, दुनिया में हमारा कोई स्थान नहीं रहेगा। इस तरह की मानसिकता में से निकलकर हमें विकास की अपनी राह मानवीय एवं अहिंसक मॉडल अपनी संस्कृति एवं मूल्यों के अनुरूप विकसित करनी होगी।

आज की परिस्थिति के संदर्भ में सर्वोदय की फिलॉसाफी जिसमें एक नये अहिंसक समाज के निर्माण का दर्शन है और जो एक शताब्दी की समयावधि में अधिक स्पष्ट, अधिक विस्तृत और अधिक सर्वांगी हुआ है। इसको लोगों के सामने रखने तथा उसके व्यापक लोक शिक्षण की आवश्यकता है। यथार्थ में हिन्द स्वराज का ऐसा रूपान्तर ही गांधी के युग कार्य को आगे बढ़ा सकेगा। गांधी की अंतिम वसीयत जिसमें राजनैतिक आजादी तो मिल गई है लेकिन आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आजादी अभी बाकी है।

इयान इलिच ने कहा था कि- विकास का नाम लेकर आज लोगों की शांति के विरूद्ध एक युद्ध ही चल रहा है। विकास के नाम पर लोगों की शांति हड़प ली गयी है। जब तक आर्थिक विकास की अमुक मर्यादा मान ली नहीं जाएगी, वहां तक लोग अपनी शांति वापस प्राप्त कर पाएंगे। आज माहौल ऐसा बना दिया गया है कि सामान्य जीवनमान में संतोष मानना या आत्मनिर्भरता का मूल्य मानना, यह विकास के खिलाफ एक बहुत बड़ा पातक है। बाजार के अर्थतंत्र पर जो निर्भर रहना नहीं चाहते, ऐसे लोगों को इस विकास ने हमेशा बाहर फेंक दिया है। आर्थिक विकास का यह नया धर्म सामान्य लागों की शांति के खिलाफ एक युद्ध ही है। मनुष्य का भौतिक और नैतिक विकास साथ-साथ होना चाहिए। नैतिक मूल्यों को तबाह कर देने वाली व्यवस्था अनर्थकारी है।

मानवीय मूल्यों की उपेक्षा करके केवल आर्थिक मुनाफे की दृष्टि से सोचने वाला अर्थशास्त्र अनर्थशास्त्र है।[9]

इस पृथ्वी पर से गरीबी और कंगालियत दूर करने के लिए हमें संसाधन बांटने पड़ेंगे, जो कुछ है उसका उपयोग बांटकर करना पड़ेगा। गरीबी जितनी असहनीय है, उससे ज्यादा असहनीय है विषमता। भोगवाद जितना भद्दा और वीभत्स है, उससे कई गुना ज्यादा वीभत्स भोगवाद और भुखमरी का सह-अस्तित्व है। इसलिए किसी भी योजना या व्यवस्था का लाभ जो सबसे नीचे है, सबसे सीधे है, उन्हीं को सबसे पहले मिलना चाहिए। सबसे नीचे वालों को सबसे पहले ऊपर उठाना है। स्पर्धा भले ही हो, कटथ्रोट न हो, अपनी मर्यादा में हो। सहयोग, परस्परावलम्बन तथा किसी को हड़पे बिना जीने की कला विकसित करनी होगी। सारांश यह कि हमारी स्वायत्तता और आत्मनिर्भरता को नीलाम करने वाला ऐसा आर्थिक विकास हमें नहीं चाहिए। भिक्षापात्र लेकर विदेशों में घूमने का यह शर्मनाक एवं आत्मघाती सिलसिला बंद हो। कुदरती साधन सम्पत्ति पर मालिकी न तो व्यक्ति की हो न राज्य की हो, लेकिन स्थानीय समूह की हो, हमारे यहां गांव की हो तथा ग्राम परिवार उसकी हिफाजत करे, उसकी सुरक्षा सांगोपांग एवं संवर्द्धन की जिम्मेवारी उठाये। दुनिया में आज इस दिशा में चिन्तन चल भी रहा है। दुनिया की साधन-सम्पत्ति का अत्यन्त विषम बंटवारा आज है, इसकी चर्चा भी कई बार होती रही है।

संदर्भ

1. हिन्द स्वराज के बारे में जनवरी, 1921 को लिखी टिप्पणी और यंग इंडिया के गुजराती अनुवाद पर से।
2. ज्ञानेन्द्र रावत, महात्मा गांधी और हिन्द स्वराज, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 68
3. डॉ. रामजी सिंह, हिन्द स्वराज का दर्शन एवं अपेक्षाएं, प्र सं 814. हिन्द स्वराज : महात्मा गांधी, पृष्ठ 36
4. कलैक्ट्रेट वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, पृ. 145
5. सनातन धर्म और महात्मा गांधी, पुषराज, पृ. 1-4
6. हिन्द स्वराज, महात्मा गांधी, अनुवादक अमृतलाल ठोकरदास नानावती, सर्व संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, पांचवा संस्करण 1996, पृ. 5
7. वही पृ. - 58
8. ज्ञानेन्द्र रावत, महात्मा गांधी और हिन्द स्वराज, नटराज प्रकाशन दिल्ली, संस्करण-2007, पेज-175